विचार बिन्दु

काम-क्रोध और लोभ, ये तीनो नरक के द्वार है। –गीता

सुखकारी-हितकारी आयु का वैज्ञानिक प्रमाण–आधार

आयुर्वेद में दीर्घायु का अर्थ सुखकारी व हितकारी आयु है, सिर्फ लम्बा जीना नहीं। दीर्घायु का तात्पर्य उस आरोग्य से है जिसके रहते हम जीवन में वह सब प्राप्त कर पाते हैं, जो प्राप्त करना चाहते हैं। जिस विद्या में सुखकारी आयु और हितकारी आयु तथा दु:खकारी और अहितकारी आयु का विचार हो तथा इन सबके उचित मानदण्डों का अध्ययन हो वह आयुर्वेद कहलाता है। स्वास्थ्य-रक्षण के द्वारा निरोगी बने रहना उपयोगी है, क्योंकि आरोग्य के बिना धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कुछ नहीं मिल सकता। यदि व्यक्ति स्वस्थ नहीं है या बीमारियों को रोक नहीं पाये, तो ना तो वह अपनी मूल प्रकृति के अनुसार कुछ धारण कर सकता है, ना ही धन कमा सकता है, ना ही खाने-पीने, सोने या जीवन का कोई आनन्द ले सकता है, और ना ही शन्तिपूर्वक संसार से विदा हो सकता है। अत: भौतिकतावादी युग में भी स्वास्थ्य से बढ़कर कुछ भी नहीं है।

आयुर्वेद के 8 अंगों में काय-चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, शालाक्य, भूतविद्या (मनोचिकित्सा), कौमारभृत्य, अगद्तंत्र, रसायन तथा वाजीकरण हैं। आयुर्वेद के दो मूल उद्देश्यों में प्रथम स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा है और दूसरा आतुर या बीमार के विकारों का प्रशमन या बीमारियों की चिकित्सा है। यहाँ स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा के संदर्भ में कुछ मूल सिद्धान्त, दर्शन या विवेचन हैं। इस चर्चा का महत्व यह है कि संहिताओं, वैज्ञानिक अध्ययनों, और अनुभवजन्य ज्ञान से प्राप्त प्रमाण हमें इस बात से आश्वस्त करने के लिये उपयोगी रहेंगे कि वर्तमान जनजीवन को स्वस्थ रखने के लिये संहिताओं, साइंस, तथा अनुभवजन्य-ज्ञान में प्रमाण-आधार सुदृढ़ है।

जहाँ तक सिद्धान्तों की समग्रता का प्रश्न है, आयुर्वेद में स्वास्थ्य-रक्षण एवं चिकित्सा से जुड़े मूल सिद्धांतों और निर्देशों की संख्या बहुत अधिक है। तथापि, कुछ सिद्धांत और निर्देश जो स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा के संदर्भ में प्रत्यक्ष रूप से लागू होते हैं, उनमे से कुछ प्रमुख हैं: 1. सामान्य-विशेष, 2. गुण-कर्म, 3, त्रिदंड, 4. त्रिविध-हेतु, 5. त्रिदोष, 6. षड्रस, 7. पंचकर्म, 8. आहार मात्रा, 9. हिताहित संसर्जनक्रम, 10. आदान-विसर्ग, 11. स्वस्थवृत्त, 12-धारणीय-अधारणीय वेग, 13. सद्वृत्त, 14. अन्नपान-विधि, 15. धातु-पोषण, 16. आहार विधिविशेषायतन, 17. आहार विधिविधान, 18. त्रिविध कुक्षीय, 19. रसायन, 20. जनपदोद्वंश आदि प्रमुख हैं। वस्तुत: इनमें से प्रत्येक के अंतर्गत, विचार-विमर्श में दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या सहित, अनेक विस्तृत विषय समाहित हैं जिन पर विस्तृत चर्चा आगे यथासमय होगी।

यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि आयुर्वेद की संहिताओं में उपरोक्त समस्त सिद्धान्तों का वर्णन तथा प्रयोग में लाये जाने की विधियाँ और उनकी उपयोगिता का विवेचन उपलब्ध है, परंतु आज समकालीन वैज्ञानिक युग में यह मानने का प्रमाण क्या है कि उक्त सलाह विज्ञान-सम्मत ही है। इस प्रश्न का उत्तर कई स्त्रोतों से दिया जा सकता है, जिनमें देश-विदेश के आयुर्वेदाचार्यों द्वारा की गई शोध से प्राप्त प्रमाण, आयुर्वेद का संदर्भ दिये बिना भी समान विषयों में विश्व भर में हुई शोध के निष्कर्षों का प्रमाण, और आयुर्वेदाचार्यों का अनुभवजन्य ज्ञान शामिल है।

प्राचीन ग्रन्थों के विपुल भण्डार की उपलब्धता के बावजूद आज हमें आधुनिक विज्ञान की ओर देखने की आवश्यकता क्यों पड़ रही है। दरअसल, वर्ष 2010 के अनुमान बताते हैं कि लगभग 15 लाख शोध-पत्र प्रति वर्ष विश्व की महत्वपूर्ण शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रहे थे। सभी प्रकार के जर्नल्स को लें तो मैक्स प्लैंक सोसायटी और स्विस फेडरल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, ज्यूरिच में कार्यरत वैज्ञानिक लुत्ज़ बॉर्नमान के अनुमान बताते हैं कि ज्ञान में वृद्धि की दर इतनी है कि अब विश्व का साइंटिफिक आउटपुट हर 9 साल में दोगुना हो रहा है। वर्ष 1600 के मध्य से वर्ष 2012 तक ज्ञान के उत्पादन को तीन चरणों में देखा जा सकता है। प्रत्येक चरण में पिछले चरण की तुलना में ज्ञान उत्पादन में तीन गुना वृद्धि पायी गयी है। प्रथम चरण, 16वीं शताब्दी के मध्य से 18वीं शताब्दी के मध्य तक, ज्ञान उत्पादन में वृद्धि की दर लगभग एक प्रतिशत थी। उसके बाद दो विश्व युद्धों के मध्यवर्ती काल में 2 से 3 प्रतिशत, तथा अंतिम विश्व युद्ध के बाद से लेकर वर्ष 2012 तक यह वृद्धि दर 8 से 9 प्रतिशत रही।

आज विश्व के अनेक डाटाबेस जैसे स्कोपस, वेब ऑफ नॉलेज और गूगल स्कॉलर आदि में सभी विषयों के कुल 4 से 5 करोड़ शोध पत्रों का भण्डार है। आयुर्वेद में भी नये ज्ञान का उत्पादन हो रहा है। वर्ष 1923 से 2016 के दौरान प्रकाशित कुल 22,268 शोधपत्रों में कहीं न कहीं आयुर्वेद का उल्लेख हुआ है। इनमें से 7,931 शोधपत्र विशेषकर आयुर्वेद पर केन्द्रित हैं। पिछले एक दशक के दौरान भारत के कई दिग्गज वैज्ञानिकों और आयुर्वेदाचार्यों की शोध ने आयुर्वेद का प्रमाण-आधार बहुत मजबूत किया है। आयुर्वेदिक बायोलॉजी, आयुर्वेदिक जीनोमिक्स, समग्र-पद्धति या होल-सिस्टम क्लिनिकल ट्रायल्स आदि में उपयोगी कार्य हो रहा है।

यदि कोई व्यक्ति आज कैंसर, डायबिटीज, हृदय रोग, मनोरोग या श्वसन तंत्र जैसी गैर-संचारी बीमारियों से पीड़ित नहीं है तो वह इन बीमारियों से आगे भी अपने आपको बचाये रख सकता है, बशर्ते आयुर्वेद की सलाह मानकर अपने जीवन में इस ज्ञान का उपयोग करे।

यहाँ कुछ उदाहरण उपयोगी होंगे। स्कोपस डेटाबेस, जो शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित उच्च कोटि के शोधपत्रों का विश्व में सबसे बड़े डेटाबेस में से एक है, में अकेले शहद पर ही 250 से अधिक क्लीनिकल ट्रॉयल्स सहित विभिन्न पहलुओं पर 22,700 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। शहद पर आयुर्वेद का कथन मधु श्लेष्मपित्तप्रशमनानाम् (च.सू. 25.40) को देखने पर ज्ञात होता है कि मूलत: आयुर्वेद के इस द्रव्य पर आयुर्वेद के सन्दर्भ सहित 122 शोधपत्र हैं, जबकि विश्व भर में शहद पर 23000 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें से 2400 से अधिक शोधपत्र शहद के औषधीय गुणों पर, व 5700 से अधिक भोजन के रूप में शहद की उपयोगिता सिद्ध करते हैं।

इसी प्रकार आमलकं वय:स्थापनानाम् (च.सू. 25.40) चरकसंहिता का एक महावाक्य है। अनेक शताब्दियों बाद आचार्य वाग्भट ने इसी वाक्य को वयस: स्थापने धात्री (अ.हृ.उ. 40.56) दोहराया है। विश्व की सर्वाधिक महत्वपूर्ण शोध-पत्रिकाओं में आमलकी पर 1750 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इन शोध पत्रों में इन-वाइट्रो और इन-वाइवो अध्ययनों के अलावा कुछ क्लीनिकल ट्रायल्स भी हैं जो निर्विवाद रूप से आँवला में रसायन गुणों को प्रमाणित करते हैं। इसी प्रकार रक्तशालि या लाल चावल पर 2582 शोधपत्र विश्व की प्रमुख शोध पत्रिकाओं में आज तक प्रकाशित हो चुके हैं। वैज्ञानिकों ने लाल चावल को कैंसररोधी, डायबिटीज-रोधी, एंटीऑक्सीडेंट, एंटीजीनोटॉक्सिक, हिपेटोप्रोटेक्टिव, कार्डियोप्रोटेक्टिव, एंटीइन्फ्लेमेटोरी, एंटीडायबिटीज, एवं इम्यूनोमोड्युलेटरी पाया है।

वर्ष 2016 में विश्व-प्रसिद्ध शोध पत्रिका लैंसेट में 10 लाख से अधिक लोगों के संदर्भ में एकत्र आंकड़ों के आधार पर प्रकाशित एक मेटाएनलिसिस से ज्ञात होता है कि प्राय: कुर्सी में बैठे-बैठे काम करने वाले लोग यदि रोजाना 60 से 75 मिनट व्यायाम करें तो उनके असमय मरने का जोखिम कम हो जाता है। बात यदि मोटापा प्रबंध के सन्दर्भ में की जाये, तो समुचित खान-पान के साथ ही सप्ताह में कम से कम 150 मिनट का व्यायाम लाभकारी है। यही स्थिति सद्वृत्त में समाहित विविध विषयों की है। शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित लगभग 1,19,957 शोधपत्र ऐसे हैं जहाँ मंगलकार्य, त्याग, उपहार, हवन, नियम, प्रायश्चित, उपवास, सस्वर पाठ, आध्यात्मिक लगाव, तीर्थाटन, क्षमा, दान आदि विषयों तथा इनका स्वास्थ्य रक्षण एवं रोगमुक्ति के संदर्भ में विश्लेषण है। योग के यम और नियम में भी सद्वृत्त के ही विविध विषय समाहित हैं। इन पर 15000 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं।

दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या के रूप में समाहित विविध विषयों में पृथक-पृथक शोध भी है। इनमें सबसे अधिक वैज्ञानिक शोध भोजन, भोजन द्रव्य, नस्य, पंचकर्म, मुख-स्वास्थ्य, कवल-गंडूष, अभ्यंग, मौसमी बीमारियों से बचाव, व्यायाम, पर्सनल-हाइजीन आदि पर उपलब्ध है। सारांश यह है कि भले ही शोध आयुर्वेद का नाम लेकर न की गई हो, लेकिन आहार स्वस्थवृत्त, सद्वृत्त, रसायन एवं पंचकर्म आदि में समाहित प्रयोगों एवं परिणामों को आधुनिक शोध के प्रकाश में देखने पर इस बात के निर्विवाद प्रमाण मिलते हैं कि आयुर्वेद के माध्यम से स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा संभव है।

इस सब चर्चा का हमारे लिये महत्व क्या है? मुख्य रूप से संहिताओं, साइंस एवं आयुर्वेदाचार्यों का अनुभवजन्य ज्ञान निर्विवाद रूप से सिद्ध करता है कि यदि कोई व्यक्ति आज कैंसर, डायबिटीज, हृदय रोग, मनोरोग या श्वसन तंत्र जैसी गैर-संचारी बीमारियों से पीड़ित नहीं है तो वह इन बीमारियों से आगे भी अपने आपको बचाये रख सकता है, बशर्ते आयुर्वेद की सलाह मानकर अपने जीवन में इस ज्ञान का उपयोग करे। हाँ, आयुर्वेद में स्वास्थ्य-रक्षण के सिद्धान्त और उन सिद्धान्तों का क्रियान्वयन योग्य आयुर्वेदाचार्यों की सलाह से ही किया जाना चाहिये ताकि समुचित परिणाम प्राप्त हो सकें। आयुर्वेद में लगभग 300 प्रकार की सलाह केवल सद्वृत्त में ही उपलब्ध हैं, और समकालीन वैज्ञानिक शोध में उन्हीं विषयों पर 5 लाख से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। शोध में उपलब्ध प्रमाणों के इस संक्षिप्त वर्णन, जो आयुर्वेद की समकालीन वैज्ञानिकता को दर्शित करता है, के बाद आगे यथासमय यहाँ प्रत्येक विषय पर पृथक-पृथक चर्चा तथा उपयोग-योग्य ज्ञान का प्रस्तुतीकरण होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

कटीले फूल

● **देवरी में गांव की कच्ची बस्ती में जेडीए ने तोड़ी सवा सौ झोपड़ियां।**

लोग बरसों निकाल देते हैं घर बनाने में और वो पल भी नहीं लगाते घर को मिटाने में।

● **400 करोड़ की नकली दवा सालाना बिक रही है राजस्थान में।**

गरीबों की जिंदगी पर भारी पड़ रहा ले कमीशन, दे कमीशन का खेल। शायद इस पर भी कभी मोदी जी 'मन की बात' कहकर मरहम लगा देंगे।

● **अमीर किसानों पर लगे टैक्स।**

जमीन की भेज देने क्या टैक्स नहीं है लगता है अब। मोदी सरकार में सांस लेने पर भी टैक्स देना पड़ेगा।

● **सावधान! चिप लगा रिमोट से चुरा रहे पेट्रोल-डीजल।**

यह है विज्ञान की तरक्की के इस्तेमाल का नायाब नुस्खा।

अरांई में मकान की नींव खुदाई में मिली दुर्लभ जैन तीर्थंकरों की 14 मूर्ति

अरांई,(निसं)। अजमेर जिले के अरांई कस्बे में शनिवार को मकान की खुदाई के दौरान अति दुर्लभ प्राचीन जैन तीर्थंकरों की 14 मूर्तियां मिली।

प्राप्त जानकारी के अनुसार आज सुबह त्रिलोकचन्द गौड़ के मकान की नींव की खुदाई के दौरान सुबह जमीन से जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां निकली। अधिक खुदाई करने पर 14 मूर्तियां जो जैन तीर्थंकरों की ऋषभदेव, महावीर स्वामी, पदमावती माता सहित अन्य तीर्थंकरों की मूर्तियां निकली। खुदाई में मिली मूर्तियों पर तिथि अंकित थी जिसके अनुसार जैन संवत 1112 ई.पू. के समय की थी, जिन पर सेठ दीनानाथ के द्वारा निर्मित अंकित था। मौके पर जैन समाज के अनुयायी सहित सैकड़ों ग्रामीण जमा हो गये।

प्रशासनिक अमले के थानाधिकारी अयूब खान, सरपंच नैराज देवी, सहायक विकास अधिकारी हनुमान प्रसाद, किसान संघ के अध्यक्ष उमराव गोरेली, भंवरलाल गौड़, जैन समाज के गीगराज जैन, निहालचंद, नरेश जैन, महेन्द्र जैन, पवन, महावीर पाटनी, भागचन्द सोगानी सहित सैकड़ों ग्रामीण

- **ऋषभदेव, महावीर स्वामी, पदमावती की भी हैं मूर्तियां**
- **1112 ई.पू. के समय की हैं जैन मूर्तियां**

मौजूद थे। मूर्तियों की खबर पर कर क्षेत्रीय विधायक भागीरथ चौधरी, डिप्टी मोटाराम बेनीवाल सहित प्रशासनिक अधिकारियों ने आठ गांव जैन, मंदिर समाज के प्रतिनिधियों से बातचीत करके उक्त मूर्तियां जैन समाज के मंदिर में सुरक्षित रखवाना तय किया गया। बाद में जैन समाज के प्रतिनिधियों ने सभी मूर्तियों को गाजे बाजे एवं मिठाई वितरित करते हुए पार्श्वनाथ जैन मंदिर (आठ गांव जैन मंदिर) अरांई में सुरक्षित रखवाई। इस दौरान सहायक विकास अधिकारी हनुमान प्रसाद में उक्त घटना की जिले के उच्च अधिकारी को विस्तृत जानकारी देकर सूचित किया।

अजमेर के अरांई कस्बे में खुदाई में निकली दुर्लभ जैन मूर्तियों को पार्श्वनाथ जैन मंदिर में रखवाया गया।

निजी अस्पतालों में सिजेरियन प्रसव का आंकड़ा 90 फीसदी के पार

कोटपूतली, (निसं)। निजी अस्पतालों में सीमा ज्यादा हो रहे सिजेरियन प्रसवों संबंधी समस्या को गंभीरता से लेते हुए राज्य सरकार के चिकित्सा विभाग ने निजी अस्पतालों पर शिंकजा कसने की तैयारी कर ली है। चिकित्सा विभाग ने राज्य के समस्त निजी अस्पतालों से सिजेरियन संबंधी रिपोर्ट प्रत्येक माह राज्य सरकार को भेजने के निर्देश जारी किए हैं।

राज्य सरकार द्वारा जारी आदेश में जिन निजी अस्पतालों में 50 प्रतिशत से ज्यादा सिजेरियन प्रसव हुए हैं ऐसे सभी अस्पतालों को संबंधित ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी को रिपोर्ट भेजकर सिजेरियन किये संबंधी कारणों का विस्तार से खुलासा करना पड़ेगा।

गौरतलब है की सरकारी अस्पतालों में सिजेरियन प्रसवों की संख्या 10 प्रतिशत से भी कम होती है जबकि निजी अस्पतालों में यह आंकड़ा 90 प्रतिशत या उससे भी अधिक होता है। जिससे प्रसूता और नवजात शिशु को जीवन भर विभिन्न शारीरिक और मानसिक विकृतियों का सामना करना पड़ रहा है। प्रसव पीड़ित महिला को प्रसूति के दौरान जब प्रसव पीड़ा होती है तब स्वाभाविक प्रक्रिया से बच्चे को जन्म ना दिलवाया जाकर महिला के

- **सरकारी अस्पतालों में सिजेरियन प्रसव 10 प्रतिशत से भी कम**
- **सिजेरियन रिपोर्ट हर माह सरकार को भेजने के दिए निर्देश**
- **बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्षा के समक्ष मानव ने रखा मामला**

पेट पर चीरा लगा कर ऑपरेशन के माध्यम से अप्राकृतिक तरीके से बच्चे को जन्म दिलाया जाता है। जिसे मेडिकल भाषा में सिजेरियन प्रसव कहा जाता है।

पूर्व में विशेष परिसिथितियों जब शिशु और प्रसव पीड़ित महिला को जान का गंभीर नुकसान होने की संभावनाएं पैदा हो जाती थी। तब सेजेरियन प्रसव किए जाते थे लेकिन इन दिनों निजी अस्पतालों में सिजेरियन प्रसव करना आम बात हो गई है।

उल्लेखनीय है कि विगत रोज राज्य की बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्षा मनन चतुर्वेदी के समक्ष जब जीवन बचाओ आंदोलन के मुख्य संयोजक नित्येन्द्र मानव ने भारी संख्या में हो रहे सिजेरियन संबंधी मुद्दा उठाया था तो उन्होंने भी इस प्रकरण को बेहद गंभीर बताते हुए कहा था कि जो बच्चे सिजेरियन के माध्यम से पैदा होते हैं वो सामान्य प्रक्रिया के तहत होने वाले बच्चों की तुलना में शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर होते हैं। व महिला को भी अगली संतान पैदा करने के दौरान अत्यधिक खतरनाक दौर से गुजरना पड़ता है साथ ही संक्रमण फैलने और हमेशा पेट पर लगे टांको के पकने की भी संभावना बनी रहती है।

गौरतलब है कि राज्य के निजी अस्पतालों में उच्च स्तर पर अनावश्यक रूप से हो रही सिजेरियन पर रोक लगाने को लेकर जीवन बचाओ आंदोलन के मुख्य संयोजक काफी लंबे समय से प्रयत्नशील थे। जिस पर कार्यवाही करते हुए राज्य के चिकित्सा विभाग ने एक अत्यधिक महत्वपूर्व और कल्याणकारी कदम उठाया है । जिस पर जीवन बचाओं आंदोलन के मुख्य संयोजक मानव ने राज्य सरकार का आभार व्यक्त किया है।

अब लेकसिटी में मिलेंगी रसायन मुक्त सब्जियां

उदयपुर, (निसं)। उदयपुरवासियों को कीटनाशक ओर केमिकल की सब्जियों ओर फलों से निजात दिलाने के लिए जैन थैले का शुभारभ किया जा रहा है इसके अंतर्गत सभी सब्जियों को आर ओ वाटर से क्लीन करने के बाद ग्राहको को दी जा सकेंगी।

प्रेस क्लब में पत्रकारों से बातचीत में जैन थैला के संचालक सुभाष जैन ओर जितेन्द्र जैन ने बताया कि रविवार को जैन थैले का प्रदेश के गृहमंत्री गुलाब चंद कटारिया उद्धघाटन करेगें। इस मौके पर बडी सादडी विधायक गौतम दक भी मौजूद रहेंगे

पिछले कुछ सालों में मंडियों में आ रही सब्जियों में कीटनाशक और केमिकल होने से लोगों में कई बिमारिया फैल रही हैं। इस कारण से उनके पिता सोहन लाल जैन को कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से पीड़ित होना पड़ा। डाक्टर्स को बताया कि उनके पिता पूर्ण रूप से सात्विक थे ओर जीवन में कभी भी नशे का सेवन नही किया फिर भी उनको कैंसर हो गया ऐसे में डाक्टर्स को कैंसर होने का कारण पूछा तो उन्होंने ऐसी सब्जियों का सेवन करना बताया जिसमें कीटनाशक ओर केमिकल था। इसके बाद सुभाष जैन ने प्रेरणा ली कि वह शहर में ऐसे प्रोजेक्ट लेकर आऐंगे

- **मशीन से एक घंटे में दो हजार किलो सब्जी शुद्ध होगी**
- **पिता की मौत के बाद सुभाष जैन ने लिया संकल्प**

जिससे आम लोगों को शुद्ध सब्जियां मिलेंगी ओर किसी कि भी कीटनाशक ओर केमिकल सब्जियों से कैंसर जैसी गंभीर बिमारी नही हो।

सुभाष जैन ने बताया कि जैन थैला में मिलने वाली सब्जियों को सबसे पहले प्रतापनगर में लगाये गये प्लांट में आर ओ वाटर धोया जाएगा। इस पूरी प्रकिया के लिए नई तकनीक की ऑटोमेटिक मशीन को लगाया गया है ताकि उसमें सब्जियां पूर्ण रूप से साफ हो सकेंगी। इस ऑटोमेटिक मशीन में एक घंटे में दो हजार किलो से ज्यादा सब्जियों को क्लीन किया जा सकेगा। जैन थेला के माध्यम से पूरे शहर के लोगों को शुद्ध सब्जियां मिल पाएगी इसके लिए 51 ऑटो शहर मे संचालित है।

ज़नवाणी

हमने देखा है दुनियां में

अपने ही दुश्मन हो जाते, दुश्मन दोस्त भी बन जाते,
हर पल रंग बदलते लोगों को, देखा है इस दुनियां में।
दहेज लेना पाप है, भ्रूण हत्या महापाप है,
अपनी बारी आने पर दहेज मांगते देखा है इस दुनियां में।
जो कहते हैं-हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई हम आपस में भाई-भाई,
ऐसे कहने वालों को जज्बात भड़काते देखा है इस दुनियां में।
जिन मात-पिता ने जन्म दिया, पाल-पोसकर बड़ा किया,
उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ अकेला मौज मनाते देखा है इस दुनियां में।
जो बड़ी-बड़ी बातें करते, कर्त्तव्य पालन का दंभ भरते,
उन्हें ईमान बेचते देखा है हमने इस दुनियां में।
सिद्धांत प्रियता पर जो लंबे-लंबे भाषण करते,
उन्हें चंद स्वार्थ के खातिर पैर पकड़ते देखा है इस दुनियां में।

–के.जी.मालव, बालदडा–बारां (राज.)

कार्टूनी नज़रिया

हिंदू से साभार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 30 अप्रैल, 2017

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2074, मृगशिरा नक्षत्र, सुकर्मा योग, बव करण, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-वृष, बुध-मेष, गुरू-कन्या, शुक्र-मीन, शनि-धनु, राहु-सिंह, केतु-कुम्भ राशि में।

मृगशिरा नक्षत्र प्रात: 8:33 तक, सुकर्मा योग रात्रि 1:15 तक है।

इसके पश्चात आर्द्रा नक्षत्र, धृति योग, बालव करण आरम्भ होगा।

रवियोग प्रात: 8:33 तक है। आज श्री आद्य शंकराचार्य जयन्ती, संत सूरदास जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:31 से 9:09 तक, लाभ-अमृत 9:04 से 12:24 तक, शुभ 2:02 से 3:34 तक।

राहुकाल: 4:30 से 6:00 तक।

मेष

घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

वृष

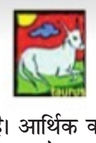

घर-गृहस्थी के खर्च में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आर्थिक कारणों से मानसिक तनाव हो सकता है। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

मिथुन

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता-सुगमता से बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी और उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क

परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं मिलेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। धन खर्च में वृद्धि हो सकती है।

सिंह

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

कन्या

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में सार्थक सफलता मिल सकती है। घर-परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

तुला

धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृश्चिक

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

धनु

घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। आपसी सहयोग-समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मकर

घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। महत्वपूर्ण कार्य से संबंधित वार्ता संभव है।

कुंभ

घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन

नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। घर-परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।